॥ ओ३म् ॥

भविष्यवाणी
(बशारत)

: लेखक :

पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय

बशारत या भविष्य-वाणी

लेखक : पूज्यपाद पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय

बशारत के धात्वर्थ हैं शुभ सन्देश । पैग़म्बरी के प्रसंग में बशारत के पारिभाषिक अर्थ यह हैं कि किसी 'नबी' के पैदा होने से बहुत दिनों पूर्व धार्मिक ग्रन्थों में यह भविष्यवाणी कर दी गई थी कि अमुक नबी भविष्य काल में आयेगा । और लोगों का पथ-प्रदर्शन करेगा । जब कोई नबी आता है और पैग़म्बरी का दावा करता है तो इस दावे की पुष्टि में यह भी कहा जाता है कि इसके आगमन की भविष्यवाणी तो बहुत दिनों पहले कर दी गई थी। और चूंकि उसका आगमन उसी भविष्यवाणी के अनुसार है इसलिए किसी को उसके मानने में ननुनच नहीं करनी चाहिये ।

हमारे इस कथन की पुष्टि तथा व्याख्या मासिक पत्र 'कान्ति' के १९६२ ई० (अक्टूबर मास) के हाल के अंक के एक उदाहरण से होती है । 'कान्ति' एक हिन्दी पत्रिका है जो इस्लाम धर्म के प्रचार के उद्देश्य से 'जमाअत-इस्लामी-हिन्द' नामी संस्था की ओर से रामपुर से निकलता है । विश्वनायक (अर्थात् जगत् गुरु) के शीर्षक से 'कौसर यज़दानी' महोदय इस लेख में लिखते हैं-

'यह वही मुहम्मद थे जिनके बारे में महात्मा बुद्ध ने

अपने शिष्य नन्द के कान में निम्न बात उस समय कही जब कि उनकी आख़िरी सांसें चल रही थीं और उनका निष्ठावान् शिष्य उनके पांवों को अपनी अश्रु-धारा से यह कह कर पखार रहा था कि-

"स्वामी ! आपके जाने के बाद संसार वालों को कौन शिक्षा देगा ?"

'नन्द !' महात्मा बुद्ध ने उत्तर दिया, 'मैं प्रथम बुद्ध नहीं हूं जो पृथ्वी पर आया, न मैं अन्तिम बुद्ध हूं । अपने समय पर एक बुद्ध और आयेगा-जो अमर सत्य मैं बताता रहा हूं, वह भी वही बतायेगा। मेरी तरह वह भी एक पूर्ण जीवन व्यवस्था का प्रचार करेगा ।"

"हम उसको कैसे पहचानेंगे ?" नन्द ने पूछा ।

"वह 'मित्तरिया'[२] के नाम से प्रसिद्ध होगा ।" स्वामी ने कहा [Leader १६ Oct. १९३०]

ऐसे ही मूसा ने इस बच्चे के आने की सूचना इस तरह दी थी-

"खुदा सीना से निकला, सईर से चमका और फ़ारान ही के पर्वतों से प्रकट हुआ दस हज़ार 'क़ुदसियों' के साथ'।

ये वही पैग़म्बर थे जिनके आने की हज़रत दाऊद, सुलेमान और नबी यसाअयाह ने खुशख़बरी दी थी। नबी हबकूक, अलयसअ आदि ने भी उनके आगमन की सूचना दी थी ।

२. मित्तरिया का अर्थ है 'वह जिसका नाम करुणा है ।' अर्थात् 'रहमत'

ये वही रसूल थे जिनके आने की सूचना फांसी के तख़्ते पर लटकते समय हज़रत ईसा ने अपने साथियों को इन शब्दों में दी थी ।

"मुझे तुमसे और भी बहुत सी बातें करनी हैं पर अब तुम उसे सहन नहीं कर सकते । जब वह पुण्यात्मा आयेगा तो तुम को तमाम सच्चाई की राहें दिखायेगा, इसलिए वह अपनी ओर से कुछ न कहेगा, जो कुछ अल्लाह की ओर से सुनेगा, वही कहेगा, और तुम्हें आगे की बातें बतायेगा ।"

(यूहना अध्याय १६, आयत १३-१४) ।

इस पूरे लेख से आपको यह ज्ञात हो जायेगा कि मुसलमान विद्वानों की दृष्टि में 'बशारत' या 'भविष्य-वाणी' का क्या अर्थ है ? और हज़रत मुहम्मद साहेब के शुभागमन की भविष्यवाणी किन शब्दों में की गई है । या दूसरे शब्दों में यह कहना चाहिये कि किस प्रकार के कथनों को मुसलमान विद्वानों ने मुहम्मद साहेब की बशारत समझा हुआ है ।

जब कोई किसी के सामने कोई 'भविष्यवाणी' करता है तो उसका प्रयोजन यही होता है कि तुम को आजकल जो कष्ट हो रहे हैं उनको दूर करने के लिए अमुक साधन भविष्य में उपस्थित होंगे । कल्पना कीजिये कि मैं बीमार हूं । चिकित्सा की कोई सम्भावना नहीं है । आप मुझे ढारस दिखाने के लिए एक भविष्यवाणी करते हैं कि 'घबराओ मत कल अमुक डाक्टर आयेगा और तुम्हारी समुचित चिकित्सा करेगा ।' तो यह सुनकर मझे अवश्य सान्त्वना होगी और मैं उस डाक्टर के आने की

प्रतीक्षा करूंगा, परन्तु यदि मेरे जीवन में कोई डाक्टर न आवे और मैं मर जाऊं और तीन चार सौ वर्ष पीछे मेरे परिवार में कोई डाक्टर उत्पन्न हो जाये और वह दावा करे कि मेरे आने का शुभ सन्देश तो इतने वर्ष पहले अमुक पुरुष को दिया जा चुका था, तो कौन ऐसा बुद्धिमान् पुरुष है जो ऐसी भविष्यवाणी को ठीक समझ ले, **और ऐसी भविष्यवाणी से वक्ता या श्रोता को क्या लाभ हो सकता है ?** अब आइये, ऊपर की भविष्यवाणियों की जांच करें ।

महात्मा बुद्ध हज़रत मुहम्मद साहेब से हज़ार ग्यारह सौ साल पूर्व हुए । अरब से बहुत दूर देश भारत में । जब वे मृत्यु के निकट थे तो उनका भक्त शिष्य स्वभावत: शोकातुर और दुखी था । उसका आचार्य और पथ-प्रदर्शक उससे अलग हो रहा था । उस समय उसके वियोगज दु:ख को दूर करने के लिए महात्मा बुद्ध ने कहा होगा कि संसार में सैकड़ों गुरु उत्पन्न हुए और होंगे। तुम क्यों दु:खी होते हो ? यह संसार तो इसी प्रकार चलता रहता है । **इसका हज़रत मुहम्मद साहेब से तो किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं है । गुरु का नाम 'मैत्रेय' दिया हुआ है जो नन्द (शिष्य) का दिया हुआ है ।** बुद्ध के इस कथन का केवल नन्द ही साक्षी है । यह वार्तालाप केवल दो मनुष्यों में हुआ था-बुद्ध में और नन्द में । बुद्ध की मृत्यु की बात नन्द ने कही होगी । 'मैत्रेय' का अर्थ है जगत् का हितैषी । सभी आचार्य संसार के मित्र होते हैं।शायद इस लेख के लेखक से पहले किसी मुसलमान विद्वान् ने हज़रत मुहम्मद

साहेब की बशारत में महात्मा बुद्ध की इस बातचीत का प्रमाण नहीं दिया। और शायद 'लीडर' पत्र में एक लेख देखकर कौसर महोदय का जी ललचाया कि इस को बशारत में शामिल कर दो। महात्मा बुद्ध के पीछे पूर्वी और पश्चिमी देशों में बहुत से नेता उत्पन्न हुए। भारतवर्ष में शंकर, रामानुज, कबीर, नानक इत्यादि। पश्चिमी देशों में हज़रत ईसा आदि। महात्मा बुद्ध के कथन में कोई शब्द ऐसा नहीं है जिससे प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में संकेत से भी यह प्रकट हो सके कि यह भविष्यवाणी हज़रत मुहम्मद के सम्बन्ध में है और **हज़रत मुहम्मद या उसके सहयोगियों में से किसी ने इस बशारत का कोई वर्णन नहीं किया।** यदि आज न्यायालय में दो मनुष्य खड़े हो जायें और एक कहे कि महात्मा बुद्ध का आशय गुरु नानक से है और दूसरा कहे कि हज़रत मुहम्मद साहेब से तो निर्णय किन शब्दों के आधार पर होगा? हमारे जीवन में ही एक अवसर आ चुका है। थियोसोफ़िकल सोसायटी के कुछ नेताओं की ओर से यह दावा किया गया था कि महात्मा बुद्ध की भविष्यवाणी के अनुसार महात्मा मैत्रेय श्री जे० कृष्णमूर्ति के शरीर में प्रकट होंगे। बहुत दिनों तक इसकी चर्चा रही। किंवदन्तियां भी चलती रहीं। यह युग भी वैज्ञानिक आविष्कारों द्वारा बदल चुका था। मिथ्या मान्यताओं और अन्धविश्वासों का ज़ोर कुछ कम हो गया था। अतः यद्यपि श्री जे० कृष्णमूर्ति अपने विचारों का प्रचार करते रहे परन्तु महात्मा मैत्रेय के रूप में नहीं। अपितु अपने वैयक्तिक रूप में। कोई सम्प्रदाय अपने प्रवर्तक या आचार्य

को मैत्रेय का अवतार मान सकता है।

अब रही हज़रत ईसा की भविष्यवाणी इसमें भी एक भी शब्द नहीं जिससे कहा जा सके कि यह भविष्यवाणी हज़रत मुहम्मद के सम्बन्ध में है। दाऊद, सुलेमान आदि की भविष्यवाणियां भी इसी प्रकार की हैं। केवल कुछ मनमोहक शब्द कह दिये गये इनको आप आशीर्वाद कहें या सहानुभूति। ऐसी भविष्यवाणियां तो प्रतिदिन हुआ करती हैं। इनका दावेदार कोई कहीं हो सकता है। न काल का निर्देश न देश का। न घटनाओं का ! **कौन सा युग है जिसमें दुराचार, लुचपन या अत्याचार, न्यूनाधिक नहीं हुए ? और कौन सा युग है जब उनमें संरक्षण के लिए नेता उत्पन्न नहीं हुए ?** मुहम्मद साहेब और महात्मा बुद्ध की जीवन घटनाओं में कौन सा सादृश्य है या उनके सिद्धान्तों और मन्तव्यों में कौन सी एकता है जिसके आधार पर कहा जा सके कि महात्मा बुद्ध ने हज़रत मुहम्मद साहेब के शुभागमन का समाचार इतनी शताब्दियों पूर्व दिया था।

हम यह बात तो स्वीकार करते हैं कि अनपढ़ लोगों में भविष्यवाणियों के विषय में एक मिथ्या विश्वास चला आता है। भारतवर्ष में ज्योतिषी लोग रोज़ भविष्यवाणियां किया करते हैं, कोई हाथ की रेखाओं को देखकर आगे की बात बताते है। कोई ग्रहों की चाल से भविष्यवाणी करता है। ये भविष्यवाणियां शुभ सन्देश भी होती हैं और अशुभ भी। आश्चर्य तो यह है कि धार्मिक भवनों की नींव ऐसे मिथ्या विश्वास पर रख ली

जाती है, और बड़े-बड़े विद्वान् भी चक्कर में आ जाते हैं तथा दुनियां को चक्कर में डाल देते हैं। हज़रत ईसा के विषय में भी ईसाई पादरियों ने यहूदियों की धर्म पुस्तकों से निकाल निकाल कर इस प्रकार की बशारतें पेश की हैं। जिनको यहूदी नहीं मानते परन्तु ईसाई मानते चले आ रहे हैं। हम यहां बाइबिल से कुछ नमूने पेश करते हैं-

मती की इंजील अध्याय १ आयत २२, २३ में है-

'यह सब कुछ इसलिए हुआ कि जो वचन प्रभु ने भविष्यवक्ता के द्वारा कहा था पूरा हो। (२२)

कि देखो एक कुंवारी गर्भवती होगी और एक पुत्र जनेगी और उसका नाम इम्मानुएल रक्खा जायगा जिसका अर्थ यह है 'परमेश्वर हमारे साथ'। (२३)

ईसाई विद्वान् कहते हैं कि इस आयत में 'पुराना नियम' के 'यशयाह' अध्याय ७ आयत १०-१४ का हवाला है। वे आयतें ये हैं-

'फिर यहोबा ने आहाज़ से कहा' (१०)। 'अपने परमेश्वर यहोवा से कोई चिह्न मांग, चाहे वह गहरे स्थान का हो या ऊपर आसमान का हो' (११)। 'आहाज ने कहा, मैं नहीं मांगने का' और मैं यहोबा की परीक्षा नहीं करूंगा। (१२) 'तब उसने कहा-हे दाऊद के घराने सुनो क्या तुम मनुष्यों को उकता देना छोटी बात समझकर मेरे परमेश्वर को भी उकता दोगे ? (१३) इस कारण प्रभु आप ही तुम को एक चिह्न देगा। सुनो, एक कुंवारी गर्भवती होगी और एक पुत्र जनेगी और उसका

नाम इम्मानुएल रक्खेगी ।' (१४)

यह भविष्यवाणी कब की गई उसी किताब में देखिये–

'यहूदा का राजा आहाज जो योताम का पुत्र और उज्जिय्याह का पोता था, उसके दिनों में आराम करके राजा रसीन और इस्राईल के राजा रमल्याह के पुत्र पेकह ने येरूशलेम से लड़ने के लिए चढ़ाई की परन्तु युद्ध करके उनसे कुछ बन न पड़ा । (१)

जब दाऊद घराने को यह समाचार मिला कि अरामियों ने एप्रैमियों से सन्धि की है तो वह और उसकी प्रजा ऐसी कांप उठी, जैसे वन के वृक्ष वायु चलने से कांप जाते हैं । (२) (यशयाह अध्याय ७ आयत १-२)। तब यहोवा ने यशयाह को आज्ञा दी कि आहाज से मिल और उसको विश्वास दिला । अतः यशायाह आहाज के पास जाता है और आहाज़ को ढारस बंधाता है कि शत्रु सफल न हो सकेंगे । हज़रत ईसा के आगमन की बशारत (भविष्यवाणी) का इसी घटना से सम्बन्ध है ।

अब तनिक सोचिये । यह आह्लाद-जन्य और सान्त्वना की बात कब कही गई ? हज़रत ईसा के आगमन के ७४२ वर्ष अर्थात् लगभग तीस पीढ़ियों पहले । आहाज को इससे क्या लाभ हुआ ? **और इसका क्या प्रमाण है कि यहां संकेत कुंआरी मरियम के गर्भवती होने और ईसामसीह की उत्पत्ति के विषय में है और न यह संभव है कि ईसामसीह के शुभागमन ने आहाज या उसके सहयोगियों को कोई लाभ पहुंचाया हो ?** हां, इतना अवश्य है कि ईसाई पादरियों

ने बेबात का बतंगड़ बना लिया। 'प्रेरितों के कामों का वर्णन' अध्याय १ की १५ से २० तक की आयतें देखिये–

'और उन्हीं दिनों में पतरस भाइयों के बीच में जो एक सौ बीस के लगभग इकट्ठे थे खड़ा होकर कहने लगा (१५) हे भाइयो ! अवश्य था कि पवित्र शास्त्र का वह लेख पूरा हो जो पवित्र आत्मा ने दाऊद के मुख से यहूदा के विषय में जो यीशु के पकड़ने वालों में अगुआ था पहले से कही थी (१६)। क्योंकि वह तो हम में गिना गया और इसने इस सेवा में सहभागी हुआ (१७)। उसने अधर्म की कमाई में एक खेत मोल लिया और सिर के बल गिरा और उसका पेट फट गया और उसकी सब अन्तड़ियां निकल पड़ीं। (१८) और इस बात को येरूशलम के सब रहने वाले जान गये। यहां तक कि उस खेत का नाम उनकी भाषा में हुकल दमा अर्थात् लहू का खेत पड़ गया। (१९) क्योंकि भजन संहिता में लिखा है कि "उसका घर उजड़ जाये और उसमें कोई न बसे और उसका पद कोई दूसरा ले ले।" (२०)।

यह है पादरी पतरस का एक लैक्चर जो हज़रत ईसा के समय के बहुत पीछे दिया गया था और जिसका उद्देश्य यह था कि सुनने वाले लोग एक पुरानी गप्प कहानी से प्रभावित होकर ईसाई धर्म में पक्के हो जायें। पतरस को यह क्या पड़ी थी कि वास्तविक घटना की जांच करते ? वे तो थे केवल वक्ता या धर्म-प्रचारक ! उनको ऐतिहासिक या प्राकृतिक घटनाओं के अनुसन्धान से क्या प्रयोजन ? भजन संहिता (दाऊद

के जुबूर) के जिस गीत का ऊपर के लैक्चर में प्रमाण दिया गया है वह तो बिल्कुल कुरान की सूरत अबूलहब से मिलता जुलता है। उसमें एक कोसा (शाप) है जो बहुधा लोग बुरे लोगों के लिए कोसते समय दिया करते हैं। उसमें ऐतिहासिक घटना का कोई उल्लेख नहीं है। यह बद्‌दुआ तो मुहम्मद साहेब के किसी शत्रु पर भी लागू हो सकती है। पतरस ने यह भी नहीं सोचा कि दाऊद के जिस गीत का प्रमाण दिया जा रहा है उसमें यीशुमसीह के साथी का कोई वर्णन नहीं है। ईसाई पादरियों का कहना है कि यहां जुबूर (भजन संहिता) के अध्याय ४१ की ९ वीं आयत अभिप्रेत है। परन्तु वहां तो दाऊद अपने शत्रु की शिकायत कर रहा है। "प्रत्युत मेरा परम मित्र जिस पर मैं भरोसा रखता था। जो मेरी रोटी खाता था उसने भी मेरे विरुद्ध लात उठाई है ॥" उसमें ईसा के चेले यहूदा का कहां वर्णन है जिसने ईसा को पकड़वाया था ?

एक और भविष्यवाणी देखिये–

"मैं उसको देखूंगा तो सही, परन्तु अभी नहीं। वह मुझे दिखाई भी देगा परन्तु निकट से नहीं। याकूब में से एक तारा उदय होगा और इस्राईल में से एक राजदण्ड उठेगा। जो मोआब के अलंगों को चूर चूर कर देगा।" (गिनती २४-१७)

यहां सितारा से अभिप्राय ईसा मसीह से लिया जाता है। यह भविष्यवाणी थी। किसने की और कब की ? और किसको शान्ति देने के लिए की ? इसका उत्तर स्वयं बाइबिल से सुनिये 'गिनती' के २२वें अध्याय में दिया है कि बिलाम एक सगुन

देखने वाला था जो पतोर नगर में रहता था । यह भविष्यवाणी उसी ने की थी ! कब की थी ? ईसामसीह के जन्म से १४५२ वर्ष पहले । 'तब इस्त्राईलियों ने कूच करके परीहो के पास यरदन नदी के इस पार मोआब के मैदानों में डेरे खड़े किये ।'

(गिनती २२-१)

मोआब के लोग डर गये कि "अब यह दल हमारे चारों ओर के सब लोगों को ऐसे चट कर जायेगा जिस तरह बैल खेत की हरी घास को चट कर जाते हैं ।" (गिनती २२-४)

इस प्रकार भयभीत होकर 'मोआब' के राजा बालाक ने जो सिप्पोर का पुत्र था, बलाम के पास आदमी भेजे कि बलाम ईश्वर से उनकी सहायता के लिए प्रार्थना करे । क्योंकि बालाक को विश्वास था कि जिसको "तू आशीर्वाद देता है वह धन्य होता है और जिसको तू श्राप देता है वह श्रापित हो जाता है" (गिनती २२-७) । इस पर बलाम ने ईश्वर से प्रार्थना की और यह भविष्यवाणी उसी का परिणाम है । जिनका जी चाहे सब अध्यायों का अवलोकन करें । सान्त्वना देनी थी बालाक को जो बिचारा इस्त्राईल की चढ़ाई से भयभीत हो रहा था । बलाम ने भविष्यवाणी कर दी कि लगभग पन्द्रह शताब्दियों पीछे ईश्वर हज़रत ईसा को भेजेगा । "जब तक इराक से तिर्याक आयेगा सांप का काटा मर जायेगा[१] ।" यह चिकित्सा है या

१. फ़ारसी भाषा की लोकोक्ति है, ता तर्याक अज़ अराक आवुर्दा शवद मार गज़ाद मुर्दा बवद । यह कथन इसी लोकोक्ति का अनुवाद है। तर्याक नाम की औषधि सर्प के काटने पर दी जाती थी।

उपहास । भविष्यवाणी है या अलिफ़लैला की कहानी ?

एक तीसरी भविष्यवाणी सुनिये–

"हे बैतलेहम एप्राता यदि तू ऐसा छोटा है कि यहूवा के हज़ारों में गिना जाता तो भी तुझ में से मेरे लिए एक पुरुष निकलेगा जो ऐस्राएलियों में प्रभुता करने वाला होगा और उसका निकलना प्राचीन काल से वरन् अनादि काल से होता आया है ।' (मीका ५–२)

यह भी हज़रत ईसा के आने की खुशख़बरी (बशारत या भविष्यवाणी) है । कब हुई ? ईसा से ७१० वर्ष पूर्व । इसके अतिरिक्त यह एक स्वप्न था जो मीका नबी ने देखा था ।

एक और बशारत का नमूना देखिये–

"जब ऐस्राइल बालक था तब मैंने उससे प्रेम किया और अपने पुत्र को मिस्र से बुलाया ।"

(होशे अध्याय ११ आयत १)

यह घटना ईसा से ७२५ वर्ष पूर्व की है । मती की इंजील के दूसरे अध्याय की १ ली आयत में इसी बशारत की ओर इशारा है कि होशे में जो भविष्यवाणी की गई थी वह पूरी हुई। क्योंकि ईशा मिस्र से बुला लिए गये । मती और होशे के वर्णनों को मिलाकर पढ़िये । अद्भुत पहेली मालूम होगी । कोई कहीं कुछ ऊटपटांग बात कह देता है और उसके सैकड़ों वर्ष पीछे कोई उसकी मनमानी व्याख्या कर बैठता है ।

हम यहां केवल एक और बशारत का उल्लेख करते हैं–

'यहोवा यह भी कहता है–सुन, रामा नगर में विलाप और बिलक–बिलक कर रोने का शब्द सुनने में आता है। राहेल अपने लड़कों के लिए रो रही है। और अपने लड़कों के कारण शान्त नहीं होती। क्योंकि वे जाते रहे।

(यिर्मया अध्याय ३१ आयत १५)

"यहोवा यों कहता है। रोने पीटने और आंसू बहाने से रुक जा" क्योंकि तेरे परिश्रम का फल निकलने वाला है। यहोवा कहता है और वे शत्रुओं के देश से लौट आयेंगे।

अन्त में तेरी आशा पूरी होगी। यहोवा की यह वाणी है। तेरे वंश के लोग अपने देश में लौट आवेंगे।'

(यिर्मयाह अध्याय ३१। आयत १६, १७)

मती अध्याय २, आयत १७ व १८ में यिर्मयाह के इस कथन को भी ईसा मसीह के आगमन से सम्बद्ध किया गया है–

"तब जो वचन यिर्मयाह भविष्य–वक्ता के द्वारा कहा गया था वह पूरा हुआ।"

रामाह में एक करुण–नाद सुनाई दिया। रोना और बड़ा विलाप। राहेल अपने बालकों के लिए रो रही थी। और शान्त होना न चाहती थी क्योंकि वे हैं नहीं।' (मती २।१७,१८)

'पुराने नियम' (Old Testament) के अनुसार यह घटना ईसा मसीह से ६०६ वर्ष पूर्व की है। और यह भविष्यवाणी नहीं अपितु उस समय की एक घटना का वर्णन है परन्तु मती महोदय के लिए यह भी ईसा के

आगमन की एक 'बशारत' बन गई ।

इन बशारतों में एक मेरी ओर से मिलाइये । फ़ारसी कवि हाफ़िज़ का एक पद है–

रसीद मुयदा कि अय्यामे ग़म न ख़्वाहद मांद ।
चुनीं नमाँद चुनाँ नीज़ हम न ख़्वाहद मांद ।
'संदेश मिला है कि दुःख के दिन न रहेंगे ।
यह नहीं रहा तो यह भी नहीं रहेगा ॥'

यह एक बशारत है । किसके लिए ? ब्रह्म देश ४ जनवरी १९४८ को अंग्रेज़ों के पंजे से मुक्त हुआ। क्या ऊपर लिखी बशारतों के समान किसी ब्रह्मदेश के निवासी को यह कहने का अधिकार प्राप्त नहीं है कि हाफ़िज़ ने यह भविष्यवाणी इसी आज़ादी के विषय में की थी ?

एक यह भविष्यवाणी ऐसी बशारतों (भविष्यवाणियों) को पढ़ते हुए मुझे अपने बालकपन की एक बात याद आ जाती है । उस समय विक्टोरिया भारतवर्ष की महाराणी थीं । वे थीं अंग्रेज़ और और ईसाई । उस समय गांव वाले कहा करते थे कि जब रावण का बेटा मेघनाद मारा गया और उसकी पत्नी सुलोचना अपने पति का शव मांगने के लिए रामचन्द्र के पास आई तो उसके विलाप को सुनकर रामचन्द्र जी का दिल पिघल गया और उन्होंने ये वरदान दिया कि तेरी जाति में से एक स्त्री पैदा होगी जो भारतवर्ष

पर राज करेगी। विक्टोरिया वही महाराणी है । जिसके विषय में प्राचीन काल में भविष्यवाणी की गई थी । रामचन्द्र जी की बात पूरी हुई ।

सत्य का पलायन–

यह थी गांव वालों की गप । किसी विद्वान् ने चाहे वह भारतीय हो या अंग्रेज़ इस गप की ओर ध्यान नहीं दिया ; परन्तु ऐसी ही कहानियों को ईसाइयों ने हज़रत ईसा के लिए और मुसलमानों ने हज़रत मुहम्मद साहेब के लिए बशारत (भविष्यवाणी) मान रखा है । जब तक ये कहानियां केवल साधारण जनता तक ही सीमित रहती हैं उस समय तक यह उनके मनोविनोद का साधन रहती हैं और इनसे लोगों का जी बहलता है परन्तु जब इनको महत्त्व और बढ़ावा दे दिया जाता है और **इनका प्रवेश धर्म ग्रन्थों में हो जाता है तो पवित्र ग्रन्थों की पवित्रता में बट्टा लग जाता है ।** और जिन विशाल व्यक्तियों से इनका सम्बन्ध जोड़ा जाता है उनकी मौलिक महत्ता भ्रान्त विचारों के पर्दे के पीछे छिप जाती है । **सम्भवतः साम्प्रदायिक प्रचारकों को कुछ सफलता मिल जाय । परन्तु धर्म का वास्तविक प्रयोजन तो निष्फल हो जाता है । कुरान में कहा है कि 'सच्च आया और झूठ भागा'। परन्तु होता है इसका उलटा । 'झूठ आता है और सत्य भाग जाता है ।'** हज़रत मुहम्मद साहेब के ग़ौरव को प्रकट करने के लिए बहुत से विशाल पराक्रम हैं । इनसे उनकी महत्ता

सिद्ध होती है। बशारत की कल्पित गप्पों और बनावटी कहानियों को गढ़ने और मानने की क्या आवश्यकता है ? कस्तूरी वह है जो स्वयं सुगन्ध दे, न कि अत्तार के कहने की ज़रूरत पड़े।[१] 'कान्ति' पत्रिका के सम्पादक महोदय ने महात्मा बुद्ध के अन्तिम वचनों को मुहम्मद साहेब की बशारत बताया है। शायद वे समझते होंगे कि महात्मा बुद्ध के इस वचन को सुन कर हिन्दू लोग इस्लाम की ओर झुक जायेंगे। हमारे मत में तो यह सीधा मार्ग नहीं है।[२]



भविष्यवाणियाँ या गप्पों की स्वादिष्ट चटनी

पाठकवृन्द ! सदा स्मरण रखिये कि भविष्यवाणियाँ गप्पबाज़ी की एक रंगीन (ब्वसवनतनिस) शैली है । आप इन्हें गप्पों की एक स्वादिष्ट चटनी कह सकते हैं । ऐसा प्रथम बार ही नहीं हुआ कि मुसलमानों ने वेद आदि प्राचीन ग्रन्थों से मुहम्मद साहिब के आगमन की भविष्यवाणियाँ खोज निकाली हैं । पहले भी ऐसे कई विफल प्रयास किये गये । वेद में श्रद्धा रखने वालों को हम बताना चाहते हैं कि इस्लाम को कई प्रकार के अन्धविश्वासों से छुड़ाने का यत्न करने वाले डॉ० गुलाम जेलानी ने भी संस्कृत साहित्य से—हिन्दुओं के ग्रन्थों से पैग़म्बर मुहम्मद के अवतार लेने की भविष्यवाणियों का उल्लेख एक पुस्तक में किया है ।

ये सब किस लिये ? हिन्दुओं को भ्रमित करने के लिये। हिन्दुओं के अन्धविश्वास का लाभ उठाकर इस्लाम की सेवा करने के लिए । ज्ञान घोटाला में पृष्ट १६ पर दी गई "खुदा सीना से......" निकला की भविष्यवाणी को मदीना बुक डिपू से छपे कुरान का भाष्यकार 'गोल मोल शब्दों की भविष्यवाणी' लिखता है । सब भविष्यवाणियाँ गोल मोल ही होती हैं । मुसलमानों में आज तक कितने महदी इन्हीं भविष्यवाणियों के कारण निकल चुके हैं । सबको मुसलमानों ने काफ़िर घोषित किया है । यही नियम वेद मन्त्रों का दुरुपयोग करने वालों पर लागू होना चाहिए । अन्यथा कुरान की कलम की सूरत (पं० लेखराम), कमर (चाँद) की पं० रामचन्द्र देहलवी, उलनूर (प्रकाश) की सूरतें पं० शान्तिप्रकाश, पं० देवप्रकाश के आगमन की भविष्यवाणी क्यों न मानी जायें ?

हिन्दुओ ! इस पीलिये के रोग का निवारण करो !

हिन्दू समाज को भी आये दिन के इन षड्यन्त्रों व कुचालों का भाण्डा फोड़ने के लिये जागरूक होकर कुछ करना पड़ेगा। दक्षिण भारत (हैदराबाद से) कभी एक मियां उठा। उसने माता कौशल्या, सीता, श्रीराम व कृष्ण का, वेदशास्त्र का अपमान करते हुए, गोहत्या के पाप को माता सीता व श्रीकृष्ण पर थोपते हुए स्वयं को लिंगायतों के महापुरुष चन्न बस्वेश्वर का अवतार बताया। वह ढोंगी भी ऐसी-ऐसी भविष्यवाणियों का गीदड़ ठप्पा लिये घूमता फिरता रहा।

हिन्दुओं के धर्मग्रन्थों में से इन्हें गौतम, कपिल, कणाद आदि ऋषियों के विषय में तो कोई भविष्यवाणी न मिली। विश्व को अनूठी योगविद्या देने वाले पातञ्जलि ऋषि के बारे में तो कुछ न मिला। गुरु अर्जुन देव, गुरु तेग़बहादुर, भाई मतिदास आदि विभूतियों के बारे में तो कोई भविष्यवाणी न मिली-राम मन्दिर का इतना बड़ा आन्दोलन चला उसके बारे में तो कुछ न मिला। वेद की सार्वभौमिक कल्याणकारी शिक्षाओं पर तो इन्होंने कभी मुंह नहीं खोला। निब घिसाने का शौक जब जी में आता है वेद से, पुराणों से व अन्य प्राचीन ग्रन्थों से सभी नबी निकाल देते हैं। ऐसा क्यों ? कहते हैं पीलिये के रोगी को सब कुछ पीला ही पीला दिखाई देता है। हिन्दुओ ! आपको पीलिये के रोग का निवारण करना होगा।